ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 511-513
www.allresearchjournal.com
Received: 29-12-2015
Accepted: 30-01-2015

मीनू रानी
अस्सिटैंट प्रौफेसर, राजकीय नेशनल महाविद्यालय, सिरसा, हरियाणा, भारत

Correspondence
मीनू रानी
अस्सिटैंट प्रौफेसर, राजकीय नेशनल महाविद्यालय, सिरसा, हरियाणा, भारत

उशा प्रियंवदा की कहानियों में स्त्री–अस्मिता

मीनू रानी

प्रस्तावना

जब अधिकारों की बात उठती है तो वह पुरूष वर्ग तक सीमित रह जाती है अथवा बना दी जाती है। भारतीय समाज के सन्दर्भ में तो यह तथ्य सोलह आने सत्य प्रतीत होता है। भारत में अंग्रेजी राज्य को स्वातन्त्रय संग्राम की पहली चिनगारी से भस्मसात करने का प्रयास झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अर्थात् एक नारी ने ही किया था और तब से लेकर स्वातन्त्रय प्राप्ति के प्रथम क्षण तक आजादी की बलिदान परम्परा में अनगिनत नारियों ने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में अपनी आहुति देकर स्वतन्त्रता की साड़ी को सुहागिन की चुनरी का रंग दिया है। इस युद्ध में नारी ने माँ, बहिन, बेटी, पत्नी आदि अनेक भूमिकाओं पर, अपना और प्रियजनों का बलिदान दिया। वह स्वयं बलिवेदी पर चढ़ी, अत्याचारों की चक्की में पिसी, अपमानित, अनाहत, अनावृत की गयी, हँसते–हँसते उसने सब सहा, किन्तु इतनी महान परम्परा को देकर भी, उसे स्वातन्त्रय वीरों की परम्परा में उचित स्थान नहीं दिया गया। साहित्यकार ने उसे, याद किया अवश्य, किन्तु संस्कारों से अलग होकर नहीं। स्वर उसका भी वही रहा। 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी' से प्रारम्भ करके 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो'[1] पर अर्द्धविराम लगाता हुआ साहित्य अन्ततः पहुँचा 'औरत एक फरेब' खाली जेब है' तक। हिन्दी कथाकार ने अबलाओं, बालविधवाओं, परित्यक्ताओं, सतियों और सौतों को लेकर कितनी ही सुधारवादी कहानियाँ क्यों न लिखी हों किन्तु नारी की स्थिति में कोई विशेष सुधार हुआ नहीं। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत हो चाहे राजनीतिक आन्दोलन की दण्ड व्यवस्था के अन्तर्गत, गॉधीवादी प्रेम के अन्तर्गत हो या फ्रायड के यौनवादी प्रेम के अन्तर्गत, प्रगतिवादी संघर्ष के अन्तर्गत हो अथवा मनोविश्लेषणवादी संघर्ष के अन्तर्गत, 'नारी, क्रय–विक्रय की वस्तु' से अधिक उपयोगी समझी नहीं गयी। नारी–विषयक भूमियाँ बदलीं, भूमिकाएँ नहीं। कहानीकार उशा प्रियंवदा की मान्यता भी इन तथ्यों से मेल खाती है।

आधुनिक हिन्दी कहानी में नारी की भूमिकाएँ साथ दो 'फ्रण्ट' पर ही रही थी। बाहरी लड़ाई थी विदेशी सत्ता के विरूद्ध जिसमें नारी पुरूष का साथ ही नहीं दे रही थी उसे स्फूर्ति, प्रेरणा और प्रोत्साहन देकर उसका मार्गनिर्देशन भी कर रही थी। इसी के समानान्तर चल रही थी स्वतन्त्रता की भीतरी लड़ाई। इस लड़ाई का क्षेत्र था समाज, जिससे जूझ रहा था देश का सुधारक वर्ग। इस क्षेत्र में नारी ने प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों प्रकार की भूमिकाओं का निर्वाह किया। इसीलिए डा0 सूतदेव ने नारी का सर्मथन करते हुए लिखा दिया ''मानव जीवन का सच्चा सौंदर्य इसी नारी नाम में निहित है।''[2] एक और तो नारी को लेकर सुधारवादी आन्दोलन हुए। इनसे प्रेरित हिन्दी कथाकार ने विधवा विवाह, बालविवाह, अनमेल विवाह, नारी–शोषण, अशिक्षा आदि अनेक समस्याओं पर आधारित रचनाओं के माध्यम से भारतीय नारी की स्थिति से समाज को परिचित कराया और उसे परिवर्तित होने का आहवान दिया। दूसरी ओर स्वयं नारी ने प्रगतिवादी कदम उठाया। उसने शिक्षा ग्रहण करना प्रारम्भ किया, नारी स्वातन्त्रय की आवाज उठायी, सामाजिक परम्पराओं, कुरीतियों, रूढ़ियों और नारी–शोषण आदि के विरूद्ध विद्रोह करते हुए, बीसवीं शताब्दी के परिवर्तित दृष्टिकोण के साथ पुरूष के समकक्ष बैठने की घोषणा कर दी। हिन्दी कहानी कार ने नारी की इस स्वतन्त्र भूमिका पर आधारित अनेक कथाएँ लिखी और उसे अपनी स्थिति सुधारने की दिशा में नैतिक सहयोग दिया।

उषा प्रियंवदा ने अपनी रचनाओं में नारी के प्रत्येक रूप का न केवल विस्तार से वर्णन किया है। अपितु स्त्री की स्वतंत्रता और उसके अधिकारों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी है। स्वतंत्रता स्वयं स्त्रीलिंग शब्द है, किंतु जब स्वतंत्रता की बात उठती है तो उसका कुछ हिस्सा ही नारी को मिल पाता है और वह स्वतंत्रता नाममात्र की ही होती है, क्योंकि पुरुष वर्ग द्वारा नारी भी यह आधुनिकता का लबाधा ओढ़े हुए जारी है। भारत में अंग्रेजी शासन से मुक्ति दिलाने में सबसे पहले स्वतंत्रता का बिगुल रानी लक्ष्मी बाई ने बजाया था। परंतु स्वतंत्रता के बाद वही नारी आज अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रयास कर रही है।

आधुनिक जीवन में नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति के पथ पर अग्रसर है, लेकिन पुरुष नारी की स्वतंत्रता का हनन करने का प्रयास करता रहा है। नारी को अबला और कमजोर समझ कर उसकी स्वतंत्रता को बांधने का प्रयास करता रहा है। उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानी संसार में नारी के विभिन्न रूपों का प्रभावशाली एवं यथार्थ रूप प्रकट करने का प्रयास किया है। नारी की स्वतंत्रता और उसकी स्थिति को उजागर करने का प्रयास उषा प्रियवंदा ने अत्यंत प्रभावशाली रूप में किया है।

भारतीय जीवनशैली में नारी को हमेशा से ही एक अबला और कमजोर स्वीकार किया गया है। यानी नारी के स्वरूप और उसकी शारीरिक क्षमता को हमेशा कम आंका गया है, लेकिन नारी की यह स्थिति पुरुषों के प्रभाव के कारण ही बनी है। नारी प्राचीन समय से ही अबला समझी जाती रही है और यही स्थिति आधुनिक युग में भी देखी जा सकती है। अबला जीवन तुम्हारी यही कहानी आंचल में दूध आंखों में पानी, महाकवि निराला की इस पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि नारी को अबला ही समझा जाता रहा है तथा उसको प्रत्येक कार्य में नारी अपने जीवन में अनेक प्रकार की भूमिकाओं का निर्वाह करती है तथा प्रत्येक स्थिति में वह दूसरों के प्रति अपने आप को समर्पित कर देती है, लेकिन फिर भी उसका शोषण ही किया जाता है। चाहे उसका पति हो या उसके घर का कोई अन्य सदस्य।

"माया ने हाथ छुड़ाने का प्रयत्न किया, पर चंदन हाथ पकड़े–पकड़े ही अंदर तक ले गए और जोर से पुकारकर कहा, 'सुनो, एक मेहमान आए हैं।' भाभी चौके से बाहर आई और देखा, फिर कहा, मैंने तो पहले ही रुकने को कहा था, फिर माया के मुख की ओर देखकर बोली, 'हाथ तो छोड़ दो बेचारी का।' उसके कहने का ढंग ऐसा था कि चंदन ने तुरंत उसका हाथ छोड़ दिया, फिर कुछ अपराधियों की तरह कहा, 'खाने का इंतजाम करो।'

हो रहा है। रुखाई से कहकर वह वापस चली गई। चंदन और माया ने स्पष्ट रूप से महसूस किया कि उसे प्रसन्नता नहीं है। माया ने फिर कहा, 'भाई साहब, बेकार झंझट होगा, मेरी नौकरानी इंतजार कर रही होगी।'

झंझट क्या? खाना अभी बना जा रहा है।' स्वर ऊंचा कर उन्होंने पत्नी को पुकारा, 'सुनो, जरा जल्दी कर दो। अंदर से उत्तर आया, कर रही हूं। पहले जरा मुन्ने को नहला दूं।"[3]

उपरोक्त उदाहरण से यह स्पष्ट है कि नारी विभिन्न प्रकार की पारिवारिक व्यवस्था को सभ्य और एकजुट बनाने का प्रयास करती है, लेकिन स्वयं उसका पति उसका अनादर करता है। उसे इस बात से कोई सरोकार नहीं होता है वह किस प्रकार की परिस्थिति में कार्य कर रही है। वह केवल अपने आदर्शों का पालन करने के लिए बाधित करता है। उसका सहयोग नहीं।

"सुबोध को अपने पर आश्चर्य हुआ कि वह इतनी–सी बात पहले ही क्यों न समझ गया? उसकी सारी चीजें वृंदा के कमरे में जा चुकी थीं, सबसे पहले पढ़ने की मेज, फिर घड़ी, आराम कुर्सी और अब कालीन और छोटी मेज भी। पहले अपनी चीज वृंदा के कमरे में सजी देख उसे कुछ अटपटा लगता था, पर अब वह अभ्यस्त हो गया था यद्यपि उसका पुरुष हृदय घर में वृंदा की सत्ता स्वीकार न कर पाता था।"[4]

नारी चाहे पुरुष की कितनी ही तन–मन से सेवा करें, लेकिन पुरुष नारी के बढ़ते प्रभाव से हमेशा चिंतित ही रहता है। उसे नारी का आधिपत्य स्वीकार नहीं होता, क्योंकि उसका हृदय नारी जैसा कोमल नहीं होता और यही कारण है कि वह अपने प्रभुत्व की खातिर नारी को उसका पूर्ण अधिकार नहीं देता। यही स्थिति उपरोक्त पंक्तियों में स्पष्ट देखी जा सकती है।

नारी अपने जीवन की परिस्थितियों से लड़ते–लड़ते इतनी थक जाती है कि कभी–कभी उसे अपने जीवन में एक साथी की जरूरत अनुभव होने लगती है। यहीं पर नारी अपने जीवन में एक अकेलापन महसूस करती है कि कहीं पर कोई उसकी बात सुने तथा उसका प्रोत्साहन करें ताकि उसके जीवन में मधुरता और सरसता आ सके। नारी के जीवन की यह स्थिति उसे सोचने पर मजबूर कर देती है कि वह इतनी कमजोर तो नहीं थी कि उसे किसी का सहारा ढूंढ़ने की जरूरत पड़े लेकिन दूसरों को देखकर कभी–कभी ऐसा मन में आ जाता है। "अचला को लगता है कि जीवन ऐसे ही बीत जाएगा– और एक दिन मौत भी द्वार पर आ खड़ी होगी। उस अंतिम क्षण अपनी जिंदगी पर दृष्टि डालकर उसे लगेगा कि वह जैसे रोती–रोती आई थी, वैसे ही जा रही है। सूखे फूलों–सी, पुराने प्रेम–पत्रों के पीले पड़े कागज सी कुछ स्मृतियां लिए हुए चली जाएगी। अचला के देखते–देखते ही सुजाता की शादी हुई, दो बच्चे हुए– और वह अचला से कहती रहती है– जिंदगी बहुत छोटी है, बहुत मूल्यवान है... भविष्य की ओर देखो, नारी की सृष्टि इसलिए नहीं हुई कि वह पुरुषों की समानता कर, लड़कियों को अर्थशास्त्र पढ़ाते–पढ़ाते काट दी जाए। सुजाता ने अचला के लिए एक सुयोग्य पात्र भी ढूंढ़ रखा था, पर अचला को लगता है कि उसके दिल में जो कुछ भी था, चुक गया है– अब वह कुछ महसूस नहीं कर पाती– सांसें आती हैं, दिल धड़कता है, जिंदगी समाप्त हो गई है।"[5]

नारी की यह स्थिति मानसिक स्थिति कभी–कभी उसे अबला का रूप प्रदान कर देती है। नारी अपनी मानसिक स्थिति के कारण भी अबला बन जाती है, क्योंकि दूसरों की खुशियों को देखकर मन में एक आस जगती है कि उसका जीवन भी भरा–पूरा हो। ऐसी ही परिस्थितियां उसे समझौता करने के लिए भी विवश कर देती है और यही स्थिति उसकी कमजोरी भी बन जाती है।

नारी अपने जीवन में अनेक ऐसे निर्णय ले लेती है, जिसके लिए उसे बाद में पछताना नहीं पड़ता है, क्योंकि पुरुष नारी की कमजोरियों का फायदा उठाना अच्छी तरह जानता है और यही स्थिति नारी को अपनी ही नजरों में अबला और कमजोर बना देती है। ऐसी स्थिति में वह अपने को कोसती है, छटपटाती है, लेकिन कुछ भी नहीं कर सकती। यही अचला के साथ भी हुआ।

"दोनों हाथों की उंगलियों को एक–दूसरे में फंसाकर, तीक्ष्ण दृष्टि से अचला को देखते हुए उसने कहा, 'मुझे सब मालूम है और उसके लिए मैं नीलू को दोषी ठहराता हूं। "शायद नीलू का दोष इतना न था, जितना–अचला नाम लेने से पहले एक पल रुकी, कि देवेन का।"

पर अचला। इस वक्त कह ही दूंगा क्योंकि यह बहुत दिनों से सोचता आया हूं– वह यह कि तुम क्यों डिकेंस की पात्री मिस हैविशम की तरह जिंदगी नष्ट कर रही हो। उसी अतीत में रहकर स्मृतियों के घेरे में भटकती हुई देवेंद्र–से दुर्बल मनुष्य के लिए इतना सब–क्यों?"[6]

कभी–कभी स्त्री की पारिवारिक परिस्थितियां उसके आने वाले भविष्य को गर्त में पहुंचा देती है। परिवार के सदस्य अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहते है, लेकिन उस मुक्ति में नारी का बंधन ऐसी बेड़ियों से बांध दिया जाता है जिसके पाश में वह बंधती ही चली जाती है और उसके जीवन से खुशियों और कल्पनाओं का संसार खत्म हो जाता है।

"साब ने कहा, मुझे तो अपने नाम पर बड़ा गर्व था। मुझे यह नहीं मालूम था कि तुम्हें मेरा नाम तक नहीं पसंद है।" फिर कुछ देर बाद, "मुझे शादी करके तुम्हारा कोई भी अरमान पूरा नहीं हुआ। चंद्रा बेचारी लड़की, मुझे तुम्हारे लिए अफसोस है।" वह चंद्रा का हाथ देर से पकड़े हुए था, बड़ी सावधानी से पलंग पर रखकर वह बाहर चला गया। रात को आयीं तो वह बहुत कुछ उखड़ी–उखड़ी सी थीं। चंद्रा को उन्होंने बताया कि बेयरा ने साम्ब की मां से कुछ बे–अदबी की थी, अस्पताल से लौटकर जब साम्ब को पता चला तो वह उसी समय कार पर अपने मां–बाप को लेकर चला गया।

"डार्लिंग हम लोगों से बड़ी भूल हो गई। शादी से पहले अच्छी तरह देख–भाल लेते। ऐसे जाहिल गंवार लोगों से तुम्हारी कैसे पट सकती है।"

चंद्रा का मन रोने को होने लगता। मम्मी की बात के उत्तर में वह कुछ कह भी न सकी।[7]

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से नारी के अबला स्वरूप को स्पष्ट देखा जा सकता है कि किस प्रकार किसी दूसरे के द्वारा किए गए कार्यों का भुगतान किसी ओर को करना पड़ता है। नारी दूसरों की खुशियों के लिए अपने जीवन की अभिलाषाओं, इच्छाओं और आकांक्षाओं का त्याग कर देती है तथा अपने जीवन की किसी भी प्रकार की परिस्थिति को भोगने के लिए तैयार रहती है।

उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानियों में नारी के अबला रूप का चित्रण बड़ी ही सजीवता से किया है कि किस प्रकार विभिन्न प्रकार के कष्ट, दुख तकलीफ सहकर भी पुरुष के आगे हमेशा नारी नतमस्तक रहती है। पुरुष प्रधान समाज में नारी की इच्छाओं और योग्यता का आंकलन नहीं किया जाता केवल उसका शोषण किया जाता है और उसकी जिंदगी को बोझिल बना दिया जाता है।

नारी का एक स्वरूप सबला भी है, जिसके आधार पर नारी को शक्ति का प्रतीक माना गया है। प्रेमचंद जी ने नारी को प्रेम, त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति स्वीकार किया है, वहीं अन्य साहित्यकारों ने भी नारी को सशक्त एवं सुदृढ़ मानसिकता की धनी के रूप में स्वीकार करते आए हैं।

स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक युग तक नारी के वर्चस्व का बोलबाला है। पुरुष चाहे कितना ही नारी–अस्तित्व को उसके गुणों को दबाने का प्रयास करें, नारी की प्रतिभा अपने आप निखर उठती है। नारी के इसी प्रारुप को सभी साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों ने स्वीकार किया है कि नारी अबला नहीं सबला है। उसमें परिवर्तन की शक्ति निहित है। वह न केवल अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए स्वतंत्र है, बल्कि अपने भविष्य का चुनाव करने के लिए भी स्वतंत्र है वह जिस मार्ग को चाहे उसका चुनाव कर सकती है। वह कठिन से कठिन कार्य को पुरुषों की तरह कर सकती है। आधुनिक युग में हम नारी के बढ़ते वर्चस्व को देख सकते हैं कि प्रत्येक क्षेत्र में नारी का दबदबा है। चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो, चाहे राजनीति या पारिवारिक व्यवस्था उसके त्याग और बलिदान को सभी नमन करते हैं और करते रहेंगे।

उषा प्रियंवदा ने भी अपनी कहानियों के माध्यम से नारी के सबला रूप को एक सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र में प्राप्त नारी की उपलब्धियों को दर्शाया है तथा नारी की शक्ति को उजागर किया है।

"जब सोचता हूं कि लौटकर इसी अकेल घर में आना पड़ेगा तो कहीं जाने का मन नहीं होता। फिर कुछ रुककर पूछा, अचला क्या नीलू को मैंने बहुत स्वतंत्रता दे रखी है?

उस प्रश्न पर अचला ने कुछ मुस्कुराकर कहा, नीलू को अगर आप बांधकर रखेंगे तो वह नीलू नहीं रहेगी। नहीं दोष मेरा ही है। मैंने शुरू से ही उसे बहुत बिगाड़ दिया। जो उसने चाहा, दिया। कभी राह में नहीं आया। पर अब सोचता हूं कि मैंने ठीक नहीं किया। फिर अपने को ही समझाते हुए बोला, मगर नीलू की इच्छाओं की अवज्ञा करता भी तो कैसे? मैं सबल, समर्थ होने के मद में रहा और वह अवश बनती हुई, जो चाहती करती गई।"[8]

इन पंक्तियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि किस प्रकार नारी की शक्ति और पुरुष की शक्ति मिलने से नारी को अत्यधिक बल मिलता है। वह किसी भी कार्य को पूरा करने की हिम्मत रखती है तथा उसकी क्षमता में वृद्धि होती है। यही बल उसके गुणों में निखार लाता है, ताकि नारी को अबला से सबला के रूप में परिवर्तित होने में जरा सा भी समय न लगे।

निष्कर्ष

नारी की अथाह शक्ति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि किस प्रकार नारी अनेक प्रकार की भूमिकाएं निभाती है। सास, बहू, बेटी, पत्नी आदि सभी में सामंजस्य केवल नारी ही स्थापित कर सकती है। इन स्वरूपों को एक सबला नारी ही जीवंत बना सकती है और यही स्वरूप हमें नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत करवाता है कि नारी शक्तिमान है।

सदंर्भ

1. जयशंकर प्रसाद : कामायनी : लज्जा सर्ग, पृ0 सं0 84।
2. डा0 सूतदेव हंस : चतुर शास्त्री के उपन्यासों में नारी का चित्रण पृ0 3।
3. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'मेरी कहानियां' में पृष्ठ नं. 37।
4. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'मेरी कहानियां' में पृष्ठ नं. 51।
5. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'मेरी कहानियां' में पृष्ठ नं. 66–67।
6. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'मेरी कहानियां' में पृष्ठ नं. 75।
7. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं. 91।
8. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं. 24।